SOCIAL PSYCHOLOGY

Part-②

B.A. (Hons) Part-III

Paper-V

By- Dr. Ramendra Kumar Singh.
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

प्रचार के साधन (MEDIA or TOOLS OF PROPAGANDA)

समाज मनोविज्ञान में प्रचार के अध्ययन को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह एक ऐसी प्रक्रिया या तरीका है जिसके माध्यम से लोगों के विचारों, व्यवहारों एवं मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है, ताकि जनमत को अपने साथ जोड़ा जा सके। इस कार्य के लिए कुछ महत्वपूर्ण साधनों को उपयोग में लाया जाता है, जिन्हें प्रचार के माध्यम या साधन कहा जाता है। प्रचार की सफलता बहुत हद तक प्रचार के इन साधनों की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। प्रचार के ऐसे कुछ प्रमुख साधन निम्नलिखित हैं :-

(1) भाषण :- भाषण प्रचार का एक महत्वपूर्ण साधन है, जिसका प्रयोग कर प्रचारक जनमत को अपने पक्ष में मोड़ लेते हैं। प्रचारक की वाणी, शैली एवं शारीरिक भाषा (Body language) जितना ही प्रभावपूर्ण, मोहक एवं सरस होती है, जनता पर उसका प्रभाव उतना ही सशक्त पड़ता है। इसमें प्रचारक जनता या Audiance को एक निश्चित स्थान पर एकत्रित करके अपनी बातों से प्रभावित कर लोगों की मनोवृत्तियों में बदलाव लाने का प्रयास करता है। आमतौर पर

भाषण के लिये खुले मैदान का चयन किया जाता है, जहाँ पर श्रोतागण की पहुँचना आसान होगा है। चुनाव के दिनों में भाषण को प्रचार का माध्यम सर्वाधिक रूप से बनाया जाता है। नेता इसके द्वारा अपनी पार्टी की नीतियों को जनता के समक्ष रखता है और सत्ता में आने पर अपनी वादों को पूरा करने की अपील करता है। जनता उनके मोहक अंदाज, लुभावनी बातें से प्रभावित होकर अपना मत देती है।

(2) समाचार पत्र : प्रचार का यह भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इसका आयाम विस्तृत होता है। इसमें छपे खबरों, लेखों, टिप्पणियों एवं सम्पादकीय तथा विज्ञापनों आदि से दूर दराज के लोग रूबरू होते रहते है। अखबार पढ़े लिखे लोगों की पंसदीदा माध्यम है; जिससे अपना Opinion बनाते है। अखबार जिस दल की प्रशंसा करता है Support करता है उस दल के प्रति लोगों की मनोवृत्ति में सकारात्मक बदलाव आ जाता है। यह भी देखने को मिलता है कि जिस दल की आलोचनाएँ अखबारों में छपती है उस दल के प्रति लोगों का झुकाव कम हो जाता है। इसीलिए कुछ ऐसी भी पार्टियाँ है जो अपना अखबार भी निकालती है।

इसकी कुछ सीमाएँ भी है। यह केवल पढ़े लिखे लोगों तक पहुँच बनाने का माध्यम है। दूसरा यह एक अप्रत्यक्ष माध्यम है। इसमें झूठी खबरें छपती है। दूसरी तरफ भाषण में नेता का सीधा सम्वाद जनता से होती है और साथ ही अपने हाव-भाव से लोगों को प्रभावित कर लेता है। अतः समाचार पत्रों की तुलना में भाषण अधिक प्रभावशाली माध्यम बन जाता है।

(3) रेडियो : प्रचार-उपकरणों में रेडियो बड़ा ही लोकप्रिय उपकरण है। रेडियो के माध्यम से लेख, कहानी, ड्रामा, जनता के नाम संदेश आदि देकर नेता अपने लोगों तक पहुँचता है। भारत सरकार एवं बिहार सरकार नशा विमुक्ति अभियान, परिवार नियोजन, स्वच्छता अभियान खुले में शौच आदि से मुक्ति आदि के लिये लोगों की समर्थन पाने के लिये रेडियो को प्रचार उपकरण के रूप में प्रयोग कर रही है।

इस प्रकार इससे शिक्षित एवं अशिक्षित दोनों तरह के लोगों को लाभ मिलती है। मनोरंजन भी हो जाता है। इसकी सीमा यह है कि इससे जनता से सीधा सम्पर्क नहीं बन पाता है और इसकी प्रचार गति काफी तेज होती है। इसके बावजूद प्रचार का यह एक उपयोगी उपकरण है।

(4) दूरदर्शन :- प्रचार का यह बड़ा ही लोकप्रिय एवं आधुनिक उपकरण है। शहर, गाँव, देहात, महल, झुग्गी झोपड़ी तक इसकी पहुँच है। इसके माध्यम से लोगों तक अपनी बातों को पहुँचाना सरल है क्योंकि यह Audio-visual दोनों है। इसलिए इसकी प्रभावशीलता कुछ अधिक ही है। इसमें कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे भाषण, वाद विवाद, संदेश, वार्तालाप, स्लोगन, समाचार, विज्ञापन, नाटक, कहानी, छोटी-छोटी एड्स सिनेमा (Add Picture) आदि के माध्यम से प्रचार होता है। चुनाव के दिनों में पक्ष एवं विपक्ष दोनों पार्टियाँ इसकी इस्तेमाल करती हैं।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिक्षित-अशिक्षित, शहर-देहात महल-झोपड़ी तक इसकी पहुँच है। यह Audio-visual दोनों है।

(5) सिनेमा एवं चलचित्र :- प्रचार का यह भी एक सशक्त माध्यम है सिनेमा के माध्यम से लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन लाना आसान है। इसमें दिखाए गए वृत्तचित्र (Documentary film) लघुचित्र आदि का प्रभाव जनता के मानसपटल पर पड़ता है।

(6) विडियो कैसेट :- विडियो फिल्म, कैसेट आदि का भी प्रभाव पड़ता है। प्रचार के लिए आजकल इसका बड़ा ही अधिक उपयोग हो रहा है। इसका प्रभाव जनता पर इसलिए अधिक पड़ता है कि प्रचारक अपने हाव-भाव से प्रभावित करता है, लेकिन यह खर्चीला माध्यम है। यह इसकी सीमा है।

(7) नुक्कड़ नाटक, सम्पर्क अभियान, रोड मार्च, पदयात्रा एवं अन्य साधन :- आजकल प्रचार के लिये इन उपकरणों का इस्तेमाल प्रायः सभी दल के लोगों (नेताओं) द्वारा किया जाता है। समर्थन जुटाने का यह बड़ा ही कारगर तरीका है। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से पार्टियाँ अपनी नीतियों एवं योजनाओं को लोगों तक पहुँचाती हैं। चौराहों पर नुक्कड़ मंडली लोगों को भीड़ जुटाकर संदेशों, छोटे नारों गीतों आदि के माध्यम से सम्पर्क बना लेती है। इसी तरह नेताओं द्वारा किया गया door to door campaign सम्पर्क यात्रा, पदयात्रा, रोड मार्च आदि के द्वारा भी प्रचार किया जा रहा है। अपने पक्ष में Opinion बनाया जाता है।

प्रचार के इन माध्यमों की अपनी विशेषताएँ हैं। लोकल क्षेत्र में लोग अधिक आकर्षित होकर उनकी बातें सुनते हैं और प्रभावित होते हैं। इसकी सीमा यह है कि सीमित क्षेत्र तक ही कारगर है।

मोबाईल एवं इन्टरनेट :- प्रचार के आधुनिकतम साधन हैं। इसके माध्यम से जन-जन तक अपनी पहुँच बनाना और अपनी नीतियों से लोगों को परिचित करना आसान हो गया है। बहुत सारे एप्प्स हैं, जिसपर अपनी बातें, संदेशों, को लोड किया जाता है। छोटे-छोटे विडियो, स्लोगन आदि अपलोड कर लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करना आसान है। व्हाट्स एप्प, फेसबुक, इन्स्टाग्राम आदि द्वारा पूरी आबादी तक प्रचार करना आसान एवं सरल है। आजकल हरेक पार्टियाँ, नेतागण, उत्पाद विक्रेता एवं व्यवसायिक वर्ग अपनी संदेश भेजते हैं।

इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रचार के ये साधन कम खर्चीले हैं तथा इसके क्षेत्र बड़ा ही व्यापक है।

पुस्तक एवं पत्रिकाएँ :- प्रचार के माध्यमों या साधनों में पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का भी प्रयोग किया जाता है। इसमें प्रचारक अपनी प्रचार सामग्रियों, विशेषताओं, नीतियों को लिखवाकर या छपवाकर लोगों तक पहुँच बनाते हैं। इन पुस्तकों एवं पत्रिकाओं को मुफ्त में या कम कीमतें रखकर लोगों तक पहुँचाया जाता है। इसका उपयोग कर जनता की मनोवृत्ति को मोड़ने का प्रयास किया जाता है। इसका प्रयोग व्यवसायिक वर्ग, उत्पाद विक्रेता भी अपने व्यवसायिक लाभ एवं उत्पाद की बिक्री बढ़ाने के लिए करते हैं। कुछ खास तरह की संस्थाएँ जैसे धार्मिक संस्थाएँ अपने धर्म के प्रचार में इसका खूब इस्तेमाल करते हैं। ईसाई धर्मावलम्बी अपने ईसाई धर्म की प्रचार में इसका बहुत ही अधिक उपयोग करते हैं। पत्रिकाओं में तो आजकल बड़े ही व्यापक स्तर पर आकर्षक विज्ञापनों के माध्यम से अपनी उत्पाद को परोसते हैं और जनता की नब्ज टटोलने की कोशिश करते हैं।

दिवाल पेंट चित्र एवं कटआउट :- प्रचार के माध्यम के रूप में इसका भी इस्तेमाल किया जाता है। जगह-जगह फोटो, चिपकाना, दिवाल पर लिखकर

अपनी बातों को जनता तक पहुँचाते हैं। परिवार नियोजन के पक्ष में लोगों की मनोवृत्तियों एवं विचारों को मोड़ने के लिये सरकार इसका खुब इस्तेमाल करती है।

इसकी विशेषता यह है कि यह प्रचार का सरल एवं सहज उपकरण है। इसका क्षेत्र भी व्यापक है। इसकी अपनी सीमाएँ भी है। अक्सर लोग चित्रों का आशय ही समझ नहीं पाते हैं। दूसरी बात यह है कि ये निर्जीव साधन हैं। अतः लोगों को ज्यादा आकर्षित नहीं कर पाते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रचार को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने के लिये अनेक साधनों का इस्तेमाल किया जाता है। इनमें कुछ माध्यम प्राचीनतम् एवं कुछ अधुनिकतम हैं। प्रत्येक माध्यमों की अपनी कुछ विशेषताएँ एवं सीमाएँ है जिनका वर्णन ऊपर किया गया है।

RK Singh

21.08.2020